

विज्ञापिका

सं. १००

३७५५	३७५५
२७००	

श्री गणेशाय नमः

2700

धूतिस नाक्षत्रवाने ॥ वरु सत्व या ॥ नयायः रुद्र कान
निम्ब न नाडीः स नाक्षत्रवानेः ॥ मरु स नानः प्रायसा निः म
हाशिश सानि ॥ धनं लि स नानयायनः कानं शुभ्र आदिः
वृद्ध वा नि सत्व या नः नमस्का नयाय ॥ धन न्या स या यः
लेष सः प्रि को न चायः दधूसः वै का न चायः रुद्रिक व

र्ष हा लप ॥ ॐ वै वक्रो द क दूः ॥ मरुः ला हा नि न वरु
मूडा सा नाडी वं का न स थिय ॥ रुद्रिक व नै पा ना लः गी
म न था हा डी ल हा ल प ॥ धन अर्ध विय ॥ ॐ स ग शुभ्र
रु अर्ध प गि रु स्वा हा ॥ न त्र गु या य अर्ध पु नि रु स्वा हा ॥
वृद्ध वा चि स त्व अर्ध पु नि रु स्वा हा ॥ दक्ष दि ग वृद्ध वा

दिसत्तु हे अर्धे प्रणि दृष्टा हा ॥ धूमि अर्धे विर्या ॐः सना
नयायः दानं लेख स्वधनयाय ॥ ॐ वज्र द के स्वाहा ॥ ॐ
दिं स्वाहा ३ आचमनयाय ॥ ॐ कायू विस्व धन स्वाहा ॥
सुसुलं वन दायः गुन्या नः दाय जो जलया ॐ नमस्का
नयाय ॥ ॐ ओं श्री मनः सग गुन च नन कमलाय स
कृष्ण नाः वरा सनं क जायः नमो हं नम नमो ॥ ७

सिषा वंधनयायः सकु ॥ ॐ मनिध निवज निमहा प्रणि
सत्र नक्षत्र क्षमा सर्व सत्त्वा नीच कैं कैं दृष्टा हा ॥ ७
धनमूल सकु न सित स धिया ॐ सकु यायः धन २१
ॐ श्री वज्र रुद्र नू क कैं दृष्टा जकि निजाल सम्य री स्वाहा ॥
धन विरु न काया ॐः स्वाहा न स द्वाय ॥ सकु ॥ ॐ ॐ न्य
न्या नूग का सर्व धी मा नां ॥ ॐ अर्ध ना नुग ना सर्व धी

मानाः ॐ प्रस्य तानुगता सर्वधर्ममाना देव्या ग्रहकुख
नाथनयनकूनचीय ॥ मकुधालनवीनची
यः लाहानिनः थपूकोपूयायः मकुवीन ॥ ॐ डीरुहक
कंदूर ॥ सिषासमूलमकुनः विदुनननिय ॥ अंगप
निं रुस्मलेपनयायः धूनकाडाः न्यासयायः हाथकीड
लपचीनः गुनः बूडः धर्मः संघया ननमस्का नयाय ॥

शुभ्रवृद्धः शुभ्रधर्मः शुभ्रसंघनसमोऽप्री शुभ्रत्यनमः ॥ थ
 नजजीलाहाननः चसयालसधिया जीः दयात्रंगुलिपति
 दियममकु ॥ ओं श्रीवज्रहृद् नृकद्रुद् जाकिधितोत्रस
 म्वर्त्तल्याहामधाल ३ ॥ थनलाहाननिषांस्वधनयायम
 कु ॥ ओं नद नृकनस्वधनः दक्षिनहृद् आकालेनसुख
 मधुर्त्तः वासहृद् आकालेनः चयमधुर्त्त ॥ थनजजी

यचिं क उडिय ॥ मनु ॥ ओरुः नमदिं स्वाहाई वाघट हं हं हं
रुद्र ॥ दपापचिं डिय ॥ ओं वं हों यों दिं मौ हं दिं हं हं रु
द्र ॥ धनः कथू कपालः लि क्षल अचि यानयायः मनु ॥ ओं
ओ हं ॥ धन ऊ ओ ला हा ननः दपा ला हा न सदायः मनु ॥
ओं ओ हंः माल ३ दाय ॥ धन दि ग वं ध नयायः मनु ॥ ओं
सैं हनि सैं हं हं रुद्र ॥ ओं ग रुद्र ग रुद्र हं रुद्र ॥ ओं ग रुद्र

यः ग रुद्र दय हं रुद्र ॥ ओं जानय रुद्र ॥ रुद्र व चि यानाऊ हं
रुद्र ॥ चतु मोल थायः रुद्र ओ नः दया सः ॥ त्रि ओ नः ऊ ओ स ॥
ओं ओ हं ॥ धम रुद्रः ग रुद्रः नृयः चसू पाल स्व था स थियः थका
का कायाय ॥ धन ऊ ग दा स याय ॥ ओं रुद्र ॥ नृमल थिय ॥
नमा दिं ॥ रुद्र रु थिय ॥ स्वाहा हं ॥ लि क्षल थिय ॥ वाघट ॥ वा
हानिया थिय ॥ हं हं हं ॥ ग ओः ष ओः मि स्वा थिय ॥ रुद्र रुद्र

क्यासापनिकथिय॥ अथानथिय॥ डोंवें॥ मरुथिय॥
होंयाँ॥ नूगलथिय॥ दिंमों॥ रघालथिय॥ हेंदिं॥ चस
यालथिय॥ कैंकैं॥ लिक्षलथिय॥ रुद्ररु॥ सकरिनंसा
हायनिथियः॥ अथानयाय॥ धनलाहानदाय॥ अंआ
हें॥ धनआचमनयाय॥ अंदिं॥ सारु॥ थूलिनिनसुता
न॥ ॥॥ धननिनकर्मविधि॥ झापां॥ नासूलाका

य॥ अंदिं॥ लसारु॥ कायाविसुधनसारु॥ धनयाः
३ नासूनाकाय॥ अंनमः॥ अंगुत्रथानमः॥ अंगुत्रया
नः॥ किञ्चनिनः॥ धनलैखसुधनयाय॥ अंअथादिजा
नमानेनः॥ सनापिनाः॥ अंसर्वनथागनः॥ नथाहंसना
पयिष्यामिः॥ अंअकुदिव्यनवालिनी॥ अंआः॥ अंसर्व

नथागतः अरिषकसमश्चीयकं ॥ सिनसलंखनरु
प ॥ उं किं ४ स्यादा ॥ ३ नासुलाकाय ॥ उं काया विष्यध
नस्यादा ॥ क्सलंखनरुस्यः पूजा रुल जय ॥ उं नमी
रुगवनः पूष्य केनु नाजायः नथागतया इरुं क्स
म्यर्क वृद्धाय ॥ नयथा ॥ उं पूष्य २ मरुयूष्यः सुपू

ष्यः पूष्य स रवकुः पूष्या वकिन नस्यादा ॥ पूजा रुज
नियाय ॥ उं आ ४ रुं ३ त्रिषु वदु आसन रुं ॥ खान रुथ
रुपा लथियका आसनयाय ॥ उं सर्वपाया नयनय
रुं ॥ खान रु अखय निने ॥ उं सधिधनि वदु धिम
राप्र नि सल नक्षे २ मी रुं रुं रुं २ स्यादा ॥ खान गिल

सहय ॥ उँ वक्र नित्र क ह प्र ध स्यादा ॥ म धु ल सः सि
ध लै निच काः थ म न नि य ॥ उँ वक्रा द के रू ॥ उँ वक्रा म
म य रू ॥ उँ वक्र ल खः सु ल रू ॥ लै ए न म धु ल थि लै ॥
थ न का कि स्या नः लै ख न स्यै म धु ल स हा य के ॥ उँ दा
नी म म यः मं गु धा च स हि नः जि नै २ च स मा रू लै

क्षी नि दू द याः पि पि नि का न य न यः वि र्ये कि स्या प न
थ नः न क्ष र्धः म क चि रु क न त्रः य स्य स ल खो रु ला
य ना पा न मि नाः ष दि अ ल र नि रु ला म नि म धु लै ॥
र व रु क न क व र्धः स र्धे ना क वि नि मू क ४ स न म नू
द वि ष्ट यः ॥ द दि वि त्रि यो को निः ध न क न क स

ई न जाय नः नाऊ वीसिः सूत्र न वन गुरु शिषि नः का
य कलसा धी कृत्वाः मधुलेखिः सुलेखि सर्वे मथा गन
नृधिष्ठानाः अधिष्ठकृत्वा ह्य ॥ ता ह नि सः हान चि कि
र्धमस्यः पूय की मरु ॥ धनस्या न दृ ह्य लः मधुलः उय
क्रांताः वलि स न यः मधुलसः स्या न वा य २० ॥ ॐ चन्द्रा

न क विमल स्वाहा ॥ ॐ वज्र स त्त सर्व विघ्ना नृ दय
द्वै ॥ विघ्नादि नास ॥ मधुलसः स्या न वा य ॥ ॐ ह ३ वज्र म ह्य म
ध्वः म न व न म ॥ दथूस ॥ ॐ हि म ध्व म न व न म ॥ ज्ञांता ॥
ॐ १ ॥ सुख म ध्व म न व न म ॥ ख ॥ ॐ १ ॥ पूर्व विदि हा
न म ॥ पूर्व ॥ ॐ १ ॥ सुदि पा य न म ॥ दक्षि न स ॥ ॐ लज्ज

य लक्ष्म्यं वं लिखाय नमः ॥ यक्षि मस्त ॥ उँ वँ उरु न कू नू व
नमः ॥ उग्र स ॥ उँ या उप दि पाय नमः ॥ अरु न को न स ॥ उँ
त्रा उप दि पाय नमः ॥ नेम न कू न स ॥ उँ ला उप दि पाय न
मः ॥ वायू व्य कू न स ॥ उँ उँ उप दि पाय नमः ॥ अरु न कू
न ॥ उँ अग रु न त्रा य नमः ॥ पूर्व स ॥ उँ ल अरु न त्रा य नमः ॥

दक्षि न स ॥ उँ ल पू नू व न त्रा य नमः ॥ यक्षि मस्त ॥ उँ वं गि
न त्रा य नमः ॥ उग्र स ॥ उँ या ख रु न त्रा य नमः ॥ अरु न कू
न स ॥ उँ त्रा व कू न त्रा य नमः ॥ नेम न कू न ॥ उँ ला म नि न
त्रा य नमः ॥ वायू व्य ॥ उँ उँ ॥ सर्व नि दान त्या नमः ॥ अरु न
न कू न ॥ उँ चै च द्रा य नमः ॥ अरु न स ॥ उँ सूर्यो य नमः ॥

षडं स॥ उं आ ४ कूं धी वक्र गु व न म॥ दध स॥ पं सी यं
त्रय ज्ञा या य॥ उं वक्र गं ध स्या हा॥ सिद्ध॥ उं वक्र वा
स्य स्या हा॥ गं कं का॥ उं वक्र पू यं स्या हा॥ स्या॥ उं वक्र धू
प स्या हा॥ धू॥ उं वक्र दि पं स्या हा॥ म॥ उं वक्र ने व
द स्या हा॥ ने वद॥ उं नमी र ग व गं वि न विले स्या

य कूं रु द्॥ धा ला॥ ध न जा कि स्या नः लं र व न स्यैः स धु
ल सहा य के॥ उं च नु ज त्वं म यं म नूः म स्रु दि पाः पु सा
रि नः ना ना न त्वं स मा किं नूः न द नू रु ज दायि नः
गु त्र त्या वृ क् ध म् रु ष्यः स धि रं ष्य न ध्ये व चः नि यो
क याः मि रा ये नः संपूर्णं न त्वं म धु लं॥ मा न॥ ध न

किं उव कास्यः ह्येथ जपत्तर्पचा ॥ ॐ ज्ञा ४३ श्रीमद्भक्त
 नगुत्रवचनचनधकमलायः सीम्य ह्यनाः गुत्रवराः
 सनैः कजायनमो ह्येनमस्तु नमानमः रुक्मा ह्येन
 नमस्यामिः श्रीगुत्रनाथपरिधम ॥ गुत्रयानकिम्पः
 निने ॥ थनसनाहिसपूजा ॥



सनाहिसरावनास्यो नय ॥ ॐ निर्मानचक्रं स्मिन्नेवं
 काजजः लस्मिमा नारिजः कनिष्ठं हवनवलिः ह्य
 नदवनिमा कर्ष्यसमयदवनि रावयनः स्वरावसू
 धा ह्येन ॐ ह्येन ३ वशवा नारियवसका नार्यः पाद्यादि
 जर्घे नानचमनीप्रतिष्ठस्याह ॥ सनाहिकासीतषसा
 २ सवेधमोनाः स्वरावशूधा ह्येन

गुणगण ॥ धनसनादिसः सानवाय ॥ ओं सर्ववृद्धे जदि
 नियवत्र पूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा ॥ दधूस ॥ ओं वक्रवाधुनि
 यवत्र पूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा ॥ कआस ॥ ओं वक्रवेनाचनि
 यवत्र पूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा ॥ मआस ॥ ओं आदियानव
 कपूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा ॥ दआन ॥ ओं पूष्टुगिति यवत्र

पूष्पीपुनिच्छुखादा॥ खडास॥ ओं कामरूपिंयवज्रपू
ष्पीपुनिच्छुखादा॥ धडास॥ ओं श्रीरुगायवज्रपूष्पी
पुनिच्छुखादा॥ जडास॥ ओं धर्मकायवज्रपूष्पीपुनिः
च्छुखादा॥ खडास॥ ओं श्रीरुगायवज्र
पूष्पीपुनिच्छुखादा॥ जडास॥ ओं निम्नो
॥ २

ॐ ३

न काय वरुणं प्रनिष्ठ स्यादा ॥ ऊ अथ धृक् न स ॥
ॐ म हा गुरु काय वरुणं प्रनिष्ठ स्यादा ॥ ख अथ धृ
क् न स ॥ ॐ नै न्या वरुणं प्रनिष्ठ स्यादा ॥
प्य ष लं ग य ॥ ध न हा व ना स्वी च्छे क्षा त न य ॥ ख र
व सुखाः सर्वे धर्मा नाः ख र व सुखा इति ॥ धूं ॥ ॐ वरु

धूं प स्वादा ॥ ॐ व श क्रु स क्र ॥ वरुणा स किं ॥ वरुणा
न वै ॥ व श वे स हं ॥ ध न का किं ॥ ना हा जल प ची न ॥
ॐ अ इ म स रु लं क र्माः स रु लं क्रि वि नं च मः स म य स त्व
द वा ना ग ॥ र वि ना ह न र्मा यः ॥ रु म द द य नृ ग स
नि पा न र व द द यः सर्व दू द नि र्मा ना थः क्रु स म

अनिनाथहो॥ धनस्त्रीनयाके॥ अमर्मगलः हिम
गनपूकागुगलेः सखनस्यः सख्यहिंरुनसगम्
मंगनं हवगुष्यः सवोत्मकस्य ननूमिषगनं हवगु
ष्यपुनिपुमाहियकस्याहा॥ धनक्राकैकमे॥ प
निविंवूः सुमाधमो आद्यासुखः अंगनाहाअन

हिलाः पालीगुरुगु कमेसत्सहवंग॥ धनअरिषाक
काय॥ उँ सर्वेन धागनअरिखेकसमधनियइं॥
धनधालसमुलधिले॥ उँ वज्रससुलेखेसुवधुध
नदं॥ धनसिद्धाकैमिके॥ उँ वज्रगीधसोहा॥ अंगीका
नय॥ उँ वज्रवाहस्यसोहा॥ लीकय॥ उँ वज्रपूष्यसो

[illegible]

त्रिपूत्रिनी ॐ वूं ॐ त्रिं खें ॥ कृता ॥ ॐ नो मों मों नों वें का
न जानः पंचा न न पंचः प्रदिप निष्ठा यः ॐ आहं गन्
जाम्बा या विष्टयन् ॥ थन वलि सखा न वाय ॥ ॐ
ॐ हृदाय स्वाहा ॥ ॐ क्रमाय स्वाहा ॥ ॐ वज्राय स्वाहा ॥
ॐ कवे नाय स्वाहा ॥ ॐ अत्रय स्वाहा ॥ ॐ नैशय स्वाहा ॥

ॐ वायुय स्वाहा ॥ ॐ विष्णु नाय स्वाहा ॥ ॐ उर्वर नि
त्य स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ चंद्राय स्वाहा ॥ ॐ चंद्राय स्वाहा
॥ ॐ अर्धाय स्वाहा ॥ ॐ नागय स्वाहा ॥ ॐ नागय
स्वाहा ॥ ॐ असुरय स्वाहा ॥ ॐ अक्षय स्वाहा ॥ ॐ सर्व
दिग्दक्ष दिग्गता कपाय स्वाहा ॥ ॥ पंचा पंचा न

पुं० ॥ उं वरु मींद स्या हा ॥ मूं ॥ सिद्ध ॥ उं वरु पूष्य स्या हा ॥
 स्या ॥ उं वरु धूय स्या हा ॥ मूं ॥ उं वरु दिप स्या हा ॥ मूं ॥
 उं वरु नेव श स्या हा ॥ नेव श ॥ उं नं मा रत्र व ह्य विन
 विल स्या लाय रुं रुं स्या हा ॥ मूं ॥ उं ने त्वो श्री वे रं वा
 नो हिं मे कुं मे जिं दिं ने स्वे लं ॥ अं कं मा वे ने दो रिं मा त्रि

[illegible]

महविनाः नो कपाय महद्विकाः किनयं दुःदस क्रोध
। वध्न रुनलः नमी सुने ॥ थन वध्न नयाय ॥ ॐ विरु
नं वृद्ध विव दिवस कलक्ष तासिः पा विन्दु लघुः मे विर्य
वान नृपः सिले सिं वैत्रि । कृति नल वल यूप्यः । व जिर्न
रि सनादः विस्म नं सु न नृप नहि न एव हर्य पंचम

रि प्रथम ॥ थन वज्र स नवीनः वलि सजा किं पूजाया
य ॥ थन मधुल सलष चा वीय ली का हा वीय ॥ ॐ व
रुत मसुल खे सुधु धाले ॥ ॐ रु वज्र स हा मध मज
म नम स्वाहा ॥ ॐ हि मध मज वज्र म स्वाहा ॥ ॐ सी सुष म
ध मज म नम स्वाहा ॥ ॐ य पूर्वी । दे हा य नम ॥ ॐ नं न

वीधिपायनम॥ वंदे उरुनगुनरुत्यनम॥ थनपंचप्र
हाप्रकाशाय॥ थनचतुनलहादि॥ जाकि कया
हाथगोत्रलपंचाने॥ ॐ आश्रमनगुनवलयादि
वलिसकिश्वनिन॥ ॐ हूं द्यादयायादि॥ ॐ सूर्यो
यदवायनागसंकासंशीषद्वारागवजसूर्येन

मास्तुते॥ थनवजसखेवांने॥ थनमलुलेश्वर॥ य॥
कत्ववसवेसत्वारथसिद्धिदत्ताश्रमलायः गमलायः
ॐ श्रीं ॐ श्रीं वजसमलुलम्॥ सर्वेषां कथानं संगत
नुसर्वदा कालं सुखं॥

2700









































